वाक्य विचार

वाक्य- शब्दों का वह क्रमबद्ध समूह जिसका कुछ अर्थ निकलता है, वाक्य कहलाता है।

जैसे- (1) राधा विद्यालय जाती है। (2) तुम अभी जाओ। (3) मैं पढ़ता हूँ और वह खेलता है।

वाक्य के भेद- वाक्य-भेद के दो आधार है- (1) अर्थ का आधार (2) रचना का आधार

(1) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं। इनके विषय में आप कक्षा नौवीं में पढ़ चुके हैं।

(2) रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं - सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र या मिश्रित वाक्य।

सरल वाक्य- जिस वाक्य में कर्ता की एक ही मुख्य क्रिया होती है उसे सरल वाक्य कहते हैं।

जैसे- (1) मोहन पुस्तक पढ़ता है। (2) मीना घर जाएगी। (3) हमने खेल देखा। इन वाक्यों में एक ही मुख्य क्रिया - पढ़ता, जाएगी, देखा का प्रयोग है।

संयुक्त वाक्य- जब दो स्वतंत्र वाक्य समुच्चय बोधक शब्द [और, तथा, व, एवं, किन्तु, पर, परंतु, लेकिन, या, अथवा, इसलिए] से जुड़े होते हैं तो वह संयुक्त वाक्य कहलाता है।

जैसे- (1) मैं आज घर गया और वह शहर चला गया। (2) बच्चे विद्यालय में हैं किन्तु वे खेल रहे हैं। (3) वहाँ मोहन आयेगा या तो सोहन आयेगा। ये सभी वाक्य और, किन्तु, या के प्रयोग से जुड़े हैं।

मिश्र या मिश्रित वाक्य- जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य हो और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य हों उसे मिश्र या मिश्रित वाक्य कहते हैं।

जैसे- (1) शिक्षक ने बताया कि भारत एक कृषि प्रधान देश है।

प्रधान उपवाक्य - शिक्षक ने बताया व आश्रित उपवाक्य - भारत एक कृषि प्रधान देश है। 'कि' योजक पद है।

(2) वे लोग यहीं रुकेंगे जो आज शाम को आएँगे।

प्रधान उपवाक्य - लोग यहीं रुकेंगे व आश्रित उपवाक्य - आज शाम को आएँगे। वे...जो योजक पद हैं।

(3) बच्चे वहाँ गए थे जहाँ ऊँचे मकान हैं।

प्रधान उपवाक्य - बच्चे गए थे तथा आश्रित उपवाक्य - ऊँचे मकान हैं। वहाँ...जहाँ योजक पद हैं।

अभ्यास प्रश्न

I- पानी बरसा और वह भीग गया। रचना के आधार पर वाक्य-भेद है-

क) सरल वाक्य

ख) संयुक्त वाक्य

ग) मिश्र वाक्य

घ) इनमें से कोई नहीं

II- निम्नलिखित में से सरल वाक्य का उदाहरण है-

क) रमेश शाम को बाजार गया।

ख) रमेश बाजार गया किन्तु अभी तक नहीं लौटा।

ग) रमेश जैसे ही बाजार पहुँचा वैसे ही बिजली चली गई ।

घ) क और ख दोनों

III- परिश्रमी व्यक्ति सफल होता है। - रचना के आधार पर वाक्य-भेद है-

क) संयुक्त वाक्य

ख) मिश्र वाक्य

ग) सरल वाक्य

घ) इनमें से कोई नहीं

IV- निम्नलिखित में से मिश्रित वाक्य है -

क) श्यामा बहुत खुश थी क्योंकि उसे पुरस्कार मिला था ।

ख) श्यामा पुरस्कार पाने से खुश थी ।

ग) श्यामा को पुरस्कार मिला और वह बहुत खुश थी ।

घ) क और ग दोनों

V- जो व्यक्ति सज्जन होते हैं वे सदा सच बोलते हैं- वाक्य का सरल वाक्य में रूपांतरण होगा-

क) सच बोलने वाले और सज्जन व्यक्ति दोनों एक ही हैं ।

ख) जो सज्जन होगा वह सच बोलेगा ।

ग) सज्जन व्यक्ति अलग होते हैं और सच बोलने वाले अलग होते हैं ।

घ) सज्जन व्यक्ति सदा सच बोलते हैं ।

उत्तर- i- ख) संयुक्त वाक्य ii- क) रमेश शाम को बाजार गया iii- सरल वाक्य iv- श्यामा बहुत खुश थी क्योंकि उसे पुरस्कार मिला था v- सज्जन व्यक्ति सदा सच बोलते हैं

वाच्य विचार

वाच्य- किसी वाक्य में क्रिया के जिस रूप से कर्ता , कर्म अथवा भाव की प्रधानता का पता चले वह वाच्य कहलाता है। जैसे-(1) वह पुस्तक पढ़ता है। (2) उसके द्वारा या उससे पुस्तक पढ़ी जाती है। (3) उससे पढ़ा जाता है। इन उदाहरणों में पढ़ता है, पढ़ी जाती है, पढ़ा जाता है- क्रिया के तीन अगल-अलग रूप हैं।

वाच्य के भेद- वाच्य के तीन भेद हैं- (1) कर्तृवाच्य (2) कर्मवाच्य (3) भाववाच्य ।

कर्तृवाच्य- जब वाक्य में क्रिया, कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है अर्थात कर्ता की प्रधानता होती है तब वहाँ कर्तृवाच्य होता है।

जैसे (1) चिड़िया आसमान में उड़ती है। (2) श्यामा चित्र बनाती थी। (3) वे सब कोलकाता जाएँगे। इन उदाहरणों में उड़ती है, बनाती थी और जाएँगे क्रियाएँ कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हैं।

कर्मवाच्य- जब वाक्य में क्रिया, कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है अर्थात कर्म की प्रधानता होती है तब वहाँ कर्मवाच्य होता है।

जैसे (1) सोहन से गीत गाया जाता है। (2) श्यामा से चित्र बनाया जाता था। (3) उनसे कोलकाता जाया जाएगा। इन उदाहरणों में गाया जाता है, बनाया जाता था और जाया जाएगा क्रियाएँ कर्ता के लिंग , वचन, पुरुष के अनुसार हैं।

भाववाच्य- जब वाक्य में क्रिया न तो कर्ता और न ही कर्म के लिंग , वचन और पुरुष के अनुसार होती है बल्कि भाव के अनुसार होती है अर्थात भाव की प्रधानता होती है तब वहाँ भाववाच्य होता है।

जैसे (1) चिड़िया से उड़ा जाता है। (2) श्यामा से हँसा जाता था। (3) उनसे जाया जाएगा। इन उदाहरणों में उड़ा जाता है, हँसा जाता था और जाया जाएगा क्रियाएँ भाव के अनुसार पुलिंग, एकवचन, प्रथम पुरुष में हैं।

विशेष- वाक्य में अकर्मक क्रिया होने पर सदैव भाववाच्य में ही क्रिया का रूप परिवर्तन होगा और सकर्मक क्रिया होने पर सदैव कर्मवाच्य में ही क्रिया का रूप परिवर्तन होगा।

अभ्यास प्रश्न

I- पुस्तक अभी पढ़ी जा रही है। इस वाक्य में वाच्य है-

क) कर्तृवाच्य

ख) कर्मवाच्य

ग) भाववाच्य

घ) इनमें से कोई नहीं

II- निम्नलिखित में से भाववाच्य का उदाहरण है-

क) वह खा नहीं सकता है।

ख) वह खाकर सोता है ।

ग) उससे खाया नहीं जाता ।

घ) क और ख दोनों

III- माली ने बाग में फूल तोड़ा। - इस वाक्य में वाच्य है-

क) कर्मवाच्य

ख) कर्तृवाच्य

ग) भाववाच्य

घ) इनमें से कोई नहीं

IV- मीरा मंदिर में भजन गाती है। - इस वाक्य का कर्मवाच्य में रूपांतरण होगा-

क) मीरा मंदिर में भजन नहीं गाएगी ।

ख) मीरा मंदिर में भजन गाएगी।

ग) मीरा द्वारा मंदिर में भजन गाया जाता है ।

घ) क और ख दोनों

V- उससे दौड़ा नहीं जाता। - इस वाक्य का कर्तृवाच्य में रूपांतरण होगा-

क) वह दौड़ नहीं सकता ।

ख) उससे अवश्य दौड़ा जाएगा ।

ग) वह सड़क पर दौड़ सकता है ।

घ) इनमें से कोई नहीं ।

उत्तर- i- ख) कर्मवाच्य ii- ग) उससे खाया नहीं जाता । iii- ख) कर्तृवाच्य iv- ग) मीरा द्वारा मंदिर में भजन गाया जाता है। v- क) वह दौड़ नहीं सकता।

पद-परिचय

पद- वाक्य में प्रयोग किए गए शब्द को ही पद कहते हैं। जैसे- मोहन घर गया। इस वाक्य में मोहन , घर, गया तीन पद हैं। ये जब वाक्य से स्वतंत्र होंगे तो शब्द कहलाएँगे।

पद-परिचय- वाक्य में प्रयोग किए गए पदों को पहचानकर उनका व्याकरणिक परिचय देना ही पद-परिचय कहलाता है। जैसे- ऊपर के उदाहरण में , **मोहन-** व्यक्तिवाचक संज्ञा , पुलिंग, एकवचन, प्रथम/अन्य पुरुष , कर्ता कारक है। **घर-** जातिवाचक संज्ञा, अन्य पुरुष, एकवचन, कर्म कारक है। **गया-** सकर्मक क्रिया, भूतकाल, पुलिंग, एकवचन, प्रथम पुरुष, कर्तृवाच्य है।

किस पद में क्या बताना जरूरी है

1. **संज्ञा में-** उपभेद, लिंग, वचन, पुरुष कारक और क्रिया के साथ संबंध।
2. **सर्वनाम में-** उपभेद, लिंग, वचन, पुरुष, कारक और क्रिया के साथ संबंध।
3. **विशेषण में-** उपभेद, लिंग, वचन और विशेष्य का विशेषण।
4. **क्रिया में-** उपभेद (कर्म और काल के आधार पर), लिंग, वचन, पुरुष और वाच्य।
5. **क्रिया विशेषण-** उपभेद, क्रिया सम्पन्न होने की दशा, क्रिया की विशेषता बताने वाला पद।
6. **संबंधबोधक-** भेद, जिन पदों से संबंध बनता हो।
7. **समुच्चयबोधक-** उपभेद, जिन पदों वाक्यों या उपवाक्यों को जोड़ता हो।
8. **विस्मयादिबोधक-** उपभेद, जिस भाव का बोध कराता हो।

अन्य पद-

9. प्रविशेषण- पहचान और वह विशेषण जिसकी विशेषता बताता हो।

10. निपात- पहचान और वह पद जिस पर ज़ोर देता हो।

संज्ञा- व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक।

सर्वनाम- पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक और निजवाचक।

विशेषण- गुणवाचक, संख्यावाचक, परिणामवाचक और सार्वनामिक।

क्रिया- कर्म के आधार पर- अकर्मक और सकर्मक। काल के आधार पर- वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यकाल। बनावट (रचना) के आधार पर- सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया और नामधातु क्रिया।

क्रिया विशेषण- रीतिवाचक, स्थानवाचक, कालवाचक और परिमाणवाचक।

संबंधबोधक- (मुख्य रूप से) कालवाचक, स्थानवाचक, दिशावाचक, साधनवाचक और तुलनावाचक।

समुच्चयबोधक- समानाधिकरण और व्यधिकरण।

विस्मयादिबोधक- (मुख्य रूप से) हर्षसूचक, शोकसूचक, घृणासूचक, आश्चर्यसूचक, भयसूचक और संबोधन सूचक।

अभ्यास प्रश्न

I- गंगा हिमालय से निकलती हैं। रेखांकित पद का पद-परिचय है-

क) जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ता कारक

ख) जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, स्त्रीलिंग, कर्मकारक

ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुलिंग, करण कारक

घ) इनमें से कोई नहीं

II- मोहन सड़क पर तेज दौड़ता है। 'तेज' का पद-परिचय है-

क) पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, स्त्रीलिंग, अकर्मक

ख) गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, स्त्रीलिंग, सकर्मक

ग) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुलिंग, अकर्मक

घ) रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'दौड़ता है' क्रिया की विशेषता बताने वाला पद

III- माली ने बाग में लाल फूल तोड़े। रेखांकित पद का पद-परिचय है -

क) गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, पुलिंग, फूल विशेष्य का विशेषण

ख) परिणामवाचक विशेषण, बहुवचन, पुलिंग, लाल विशेष्य का विशेषण

ग) संख्यावाची विशेषण, एकवचन, पुलिंग, फूल विशेष्य का विशेषण

घ) इनमें से कोई नहीं

IV- उसने पत्र लिखवाया। - 'लिखवाया' का पद-परिचय होगा-

क) भाववाचक संज्ञा, एकवचन, पुलिंग, भूतकाल

ख) प्रेरणार्थक क्रिया, एकवचन, पुलिंग, भूतकाल

ग) गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, स्त्रीलिंग, भूतकाल

घ) क और ख दोनों

V- वाह! तुमने बहुत अच्छा किया। - रेखांकित का पद परिचय क्या होगा?

क) भाववाचक संज्ञा, एकवचन, पुलिंग, कर्ता कारक

ख) पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्म कारक

ग) संख्यावाची विशेषण, एकवचन, पुलिंग, करण कारक

घ) विस्मयादि बोधक अव्यय, हर्षसूचक, उत्साह प्रकट करने वाला पद

उत्तर- i- ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुलिंग, करण कारक

ii- घ) रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'दौड़ता है' क्रिया की विशेषता बताने वाला पद

iii- क) गुणवाचक विशेषण, बहुवचन, पुलिंग, फूल विशेष्य का विशेषण

iv- ख) प्रेरणार्थक क्रिया, एकवचन, पुलिंग, भूतकाल

v- घ) विस्मयादि बोधक अव्यय, हर्षसूचक, उत्साह प्रकट करने वाला पद

अलंकार परिचय

अलंकार- 'अलंकार' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है 'आभूषण' यानी गहना। अलंकार शब्द 'अलम्' और 'कार' दो शब्दों के योग से बना है। 'अलम्' का अर्थ है 'शोभा' तथा 'कार' का अर्थ हैं 'करने वाला'। अर्थात् काव्य की शोभा (सौन्दर्य) बढ़ाने वाले शोभाकारक तत्वों को अलंकार कहते हैं।

जैसे- (1) बालकु बोलि बधौं नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।

(2) प्रीति-नदी में पाऊँ न बोरयो, दृष्टि न रूप परागी।

काव्य का सौन्दर्य दो रूपों अर्थात शब्द एवं अर्थ की सुन्दरता में वृद्धि करके चमत्कार उत्पन्न करने वाले कारकों को अलंकार कहते हैं।

अलंकारों के प्रयोग से काव्य रुचिकर और पठनीय बनता है। भाषा की गुणवत्ता बढ़ जाती है और उसमें सजीवता आ जाती है। अभिव्यक्ति में सरसता और स्पष्टता आने से कविता संप्रेषणीय बन जाती है। जैसे आभूषण नारियों का श्रृंगार है, ठीक उसी प्रकार साहित्य में अलंकार काव्य का श्रृंगार है।

अलंकार के भेद- अलंकार के मुख्यत: दो भेद हैं- (1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

शब्दालंकार- जहाँ शब्दों के विशिष्ट प्रयोग से काव्य का सौन्दर्य बढ़ जाता है, वहाँ शब्दालंकार होता है। जैसे-

(1) अवधि अधार आस आवन की, तन मन विथा सही।

(2) चारू चंद्र की चंचल किरणें खेल रहीं हैं जल-थल में।

शब्दालंकार के प्रकार- शब्दालंकार के मुख्य रूप से तीन प्रकार हैं-

(1) अनुप्रास अलंकार

(2) यमक अलंकार

(3) श्लेष अलंकार

अनुप्रास अलंकार- काव्य में जहाँ एक ही वर्ण बार-बार दोहराया जाए अर्थात् वर्णों की आवृत्ति हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे- (1) कल कानन कुंडल मोर पखा, उर पे बनमाल बिराजत है।

(2) भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं। बिपुल बार महि देवन्ह दीन्हीं।।

यमक अलंकार- काव्य में जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार आए लेकिन उसके अर्थ भिन्न-भिन्न हों वहाँ यमक अलंकार होता है।

जैसे- (1) काली घटा का घमंड घटा, नभ मंडल तारक वृंद खिले।

(2) तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं।

श्लेष अलंकार- काव्य में जहाँ कोई शब्द एक ही बार आए लेकिन उसके अर्थ भिन्न-भिन्न हों वहाँ यमक अलंकार होता है।

जैसे- (1) नर की अरु नलनीर की **गति** एकै करि जोए। जेतो नीचे ह्वै चलै तेतो ऊँचो होए।।

(2) रावन सिर सरोज बनचारी। चल रघुवीर **शिलीमुख** धारी।।

अर्थालंकार- जहाँ काव्य में अर्थ के माध्यम से काव्य का सौन्दर्य बढ़ जाता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।

जैसे- (1) चरण कमल बन्दौ हरि राई।

(2) कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा। ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा।।

अर्थालंकार के प्रकार- अर्थालंकार के निम्नलिखित प्रकार हैं-

(1) उत्प्रेक्षा अलंकार

(2) अतिशयोक्ति अलंकार

(3) मानवीकरण अलंकार

उत्प्रेक्षा अलंकार- जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना व्यक्त की जाय , वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसमें मनु , मानो, मानहु, जनु , जानो, जानहु आदि शब्दों का प्राय: प्रयोग हुआ रहता है।

जैसे- (1) तुम्ह तौ काल हाँक जनु लावा। बार बार मोही लागि बोलावा।।

(2) सोहत ओढ़े पीत पट , श्याम सलोने गात।

मानहु नीलमणि शैल पर , आतप परयो प्रभात।।

अतिशयोक्ति अलंकार- जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ाकर किया जाय कि वह लोक व्यवहार में असंभव लगे वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

जैसे- (1) हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग। लंका सारी जल गई गए निशाचर भाग।।

(2) आगे नदिया पड़ी अपार , घोड़ा कैसे उतरे पार।

राणा ने सोचा इस पार , तब तक चेतक था उस पार।।

मानवीकरण अलंकार- जहाँ काव्य में प्रकृति की वस्तुओं में मानवीय कार्य-व्यवहार दिखाया जाए वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

जैसे- (1) मेघ आए बड़े बन-ढन के सँवर के।

(2) **दिवसावसान का समय**

मेघ आसमान से उतर रही है

वह संध्या सुंदरी परी-सी

धीरे-धीरे-धीरे।

अभ्यास प्रश्न

I- मधुवन की छाती को देखो, सूखी इसकी कितनी कलियाँ। इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) उत्प्रेक्षा अलंकार

ख) श्लेष अलंकार

ग) अतिशयोक्ति अलंकार

घ) इनमें से कोई नहीं

II- सखी सोहत गोपाल के, उर गुंजन की माल।

बाहर लसत मानो पिये, दावानल की ज्वाल।। इस उदाहरण में कौन-सा अलंकार है?

क) मानवीकरण अलंकार

ख) अतिशयोक्ति अलंकार

ग) उत्प्रेक्षा अलंकार

घ) इनमें से कोई नहीं

III- निम्नलिखित में से मानवीकरण अलंकार का उदाहरण है-

क) नदी-तट से लौटती गंगा नहा कर, सुवासित भीगी हवाएँ सदा पावन।।

ख) हाय *फूल सी कोमल बच्ची,* हुई राख की ढेरी थी।

ग) *पूत सपूत, तो क्यों धन संचय? पूत कपूत, तो क्यों धन संचय?*

घ) इनमें से कोई नहीं

IV- निम्नलिखित में से अतिशयोक्ति अलंकार का उदाहरण है-

क) मेघ आए बड़े बन-ढन के सँवर के।

ख) कल कानन कुंडल मोर पखा, उर पे बनमाल बिराजत है।

ग) भूप सहस दस एकहिं बारा। लगे उठावन टरत न टारा।।

घ) इनमें से कोई नहीं

V- बीती विभावरी जाग री!

अंबर पनघट में डुबो रही

तारा-घट उषा नागरी - इस पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) उत्प्रेक्षा अलंकार

ख) अतिशयोक्ति अलंकार

ग) श्लेष अलंकार

घ) मानवीकरण अलंकार

उत्तर- i- ख) श्लेष अलंकार

ii- ग) उत्प्रेक्षा अलंकार

iii- क) नदी-तट से लौटती गंगा नहा कर, सुवासित भीगी हवाएँ सदा पावन।।

iv- ग) भूप सहस दस एकहिं बारा। लगे उठावन टरत न टारा।।

v- घ) मानवीकरण अलंकार